आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 312 | ARYA SABHA MAURITIUS | *11th July to 20th July 2015*

ओ३म् । ये त्रिष्टाः परियन्ति विश्धा रूपाणि विभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अध्य दधातु में ।।

अथर्ववेद १/१/१

Om ! Ye trishaptā paryanti vishwā rupāni vibrataha.
Vāchaspatirbalā teshām tanvo adhya dadhātu me.

Atharva Veda 1/1/1

Glossaire / Shabdārtha

Ye – ce /ces, **Trishaptā** 3 x 7 (trois fois sept) = 21, Les vingt-et-un éléments / principes, **Vishwā** - Le monde entier, **Rupāni** - La nature vivante aussi bien que ses éléments inertes ou statiques, **Vibrataha** – en soutenant, **Pari yanti** – qui est en mouvement / action ou qui est dynamique, **Vāchaha** - La voix / la parole, **Vāchaspati** – (1) L'âme (ātmā) (ii) les principes vitaux (prāna) (iii) Dieu (iv) le Maître (Achārya), le précepteur, le Professeur, L'éducateur, **Patiha** – qui entretient / élève/ nourrit, **Teshām** –à eux, **Balā** – la force, **Adhya** – aujourd'hui / de tout temps / toujours / éternellement, **Mé tanvaha** –à l'intérieur de mon corps, **Dadhātu** – tenir, soutenir, maintenir.

Interprétation / Anushilan :

De toute éternité le Seigneur a tout prévu et a réuni les conditions favorables pour rendre possible la vie de toutes les créatures sur la terre et préserver les éléments inertes ou statiques qui s'y trouvent pour le bien-être de tout le monde.

Il a mis à la disposition de l'homme et de toutes les autres créatures un environnement avec les éléments suivants :

(i) La nature avec toute sa richesse, toutes ses ressources et ses trois composants qui favorisent l'émergence de trois attributs clés suivants dans l'esprit de l'homme au cours de sa vie ici-bas.

Ce sont :

(a) **Sattva goon** – qui signifie la culture des attitudes positives en soi telles que la bonté, l'amour, la miséricorde, la générosité, le respect. La spiritualité, l'honnêteté, le pardon et autres valeurs.

(b) **Rajas goon** – qui signifie l'adoption des attitudes négatives : telles que la passion, l'émotion, la frénésie, mouvement très vif qui pousse quelqu'un vers ce qu'il désire de toutes ses forces ou vers ce qu'il aime, avec violence, avec intensité en aveugle.

(c) **Tamas goon** – qui signifie être sous l'emprise des attitudes répréhensibles et condamnables telles que : agissement irréfléchis / aveugles, vivre dans les ténèbres de l'ignorance qui génèrent l'injustice, la violence, les crimes et les autres pèches.

Sachons que 'Sattva goon' - les attitudes positives doivent être adoptées dans notre vie.

(ii) Les planètes et autres corps célestes tels que le soleil qui ont une influence considérable sur la vie terrestre de par leur apport bienfaisant.

(iii) Les cinq éléments ('Panch mahābhoot' en Hindi) qui sont l'eau, l'air, la terre, l'espace et le feu / l'électricité / l'énergie cosmique.

Ces éléments sont essentiels, voire indispensables, dans la vie de tout le monde. Tous ces facteurs / éléments jouent un rôle prépondérant pour rendre possible notre existence.

En même temps il ne faut pas oublier que notre corps est aussi muni de ses potentiels par le Seigneur pour pouvoir fonctionner et réagir avec les éléments de la nature et vivre convenablement.

Le potentiel de notre corps sont nos 21 principes (Tri-sapta ou 3 x 7) suivants :

'10 pranas' / 10 principes vitaux qui sont : prāna, apāna, samāna, vyāna, udāna, nāg, kurmā, krikal, devdut, dhananjaya.

5 Principes de sensation / '5 jyana indriyan' qui sont : **les yeux** - la vue, **le nez/la narine** - l'odorat, **le palai/ la langue** – le goût, **les oreilles** - l'ouïe, **l'épiderme** - le toucher / la sensation.

5 Principes physiques / '5 karma indriyan' qui sont : **La langue**-parler, **les mains et les pieds** – actions et mouvements, **les organes génitaux, l'organe de l'excrétion.**

1 Antaha Karan en Hindi – L'esprit et l'intellect – le principe de volonté et de discernement.

Munis de nos 21 principes, nous les êtres humains, nous pouvons vivre paisiblement en harmonie avec la nature en gérant et en exploitant toutes les ressources qui sont à notre portée.

Que le Seigneur, qui est Tout-puissant, Omniscient, Omniprésent et le Maitre Suprême de l'univers, et de qui proviennent les paroles sacrées des Vedas, nous bénisse en nous accordant la force physique, la vitalité, la capacité intellectuelle et les attitudes positives de sorte que nous puissions jouir d'une très bonne santé, et que nous connaissions le bonheur et la prospérité, et que nous ayons une foi inébranlable en lui.

N. Ghoorah

सम्पादकीय

जीवन-निर्माण के स्तम्भ

संसार में मनुष्य एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। वह अपनी शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्ति द्वारा अपना जीवन निर्माण करने में सफल होता है। उसे अपना जीवन-चरित्र सुधारने का अवसर प्राप्त होता है। ईश्वर भक्ति के बल पर मुक्ति प्राप्त करने का भाग्य मिल पाता है ।

स्वाध्याय और सत्संग जीवन निर्माण के मुख्य स्तम्भ हैं। जीवन-निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण योगदान है। एक स्वाध्यायशील व्यक्ति का जीवन, व्यवहार, सोच, स्वभाव आदि बदलते रहते हैं। एक स्वाध्याय प्रेमी कई प्रकार की बुराइयों से बचा रहता है। वह विविध समस्याओं, चिन्ताओं, रोगों आदि से मुक्त रहता है। स्वाध्याय के बल पर विश्व के अनेक महापुरुषों के जीवन बदल गए ।

आत्मचिन्तन का नाम भी स्वाध्याय है। जिसका आत्मज्ञान जागा रहता है, वह अपने जीवन को सफल बना पाता है। इसीलिए अपने दैनिक व्यवहारों, कर्मों आदि को झांक कर देखते रहना चाहिए कि क्या अच्छा किया? और क्या गलत? सुधारवादी बनकर अपने जीवन का सुधार करते रहना मानव का मुख्य उद्देश्य है।

मनुष्य ही एक ऐसा सौभाग्यशाली जीव है, जो शिक्षाप्रद पुस्तकों का स्वाध्याय कर पाता है और कई सुधारवादी ग्रन्थों को पढ़कर मनन-चिन्तन कर सकता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन कर सकता है।

स्वाध्याय और सत्संग में बड़ी शक्ति होती है। शुद्ध, पवित्र और सुखी जीवन जीने के लिए दोनों एक आधार-स्तम्भ माने जाते हैं। इनसे मनुष्य गलत सोच-विचार, पाप, अधर्म आदि से बचा रहता है। इन दोनों के माध्यम से आत्मा को बल मिलता है। वास्तव में सत्संग और स्वाध्याय तो आत्मा का भोजन है।

आत्मज्ञान से अनेक सांसारिक समस्याओं का समाधान हो जाता है। आध्यात्मिक तथा धार्मिक-जीवन के लिए सत्संग और स्वाध्याय परम आवश्यक हैं। ये दोनों ही हमारे जीवन की उद्देश्य-पूर्ति में विशेष सहायक होते हैं। इसी कारण कभी भी सत्संग और स्वाध्याय से नाता नहीं तोड़ना चाहिए। सत्संग के प्रभाव से हमारी विचारधारा सदा बदलती रहती है, ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होती रहती है और मनोभावनाएँ पवित्र होती जाती हैं। नियमित स्वाध्याय करते रहने से आत्मबोध होता रहता है, जो हमारे जीवन के निर्माण में अति सहायक होते हैं।

अतः हमें जीवन पर्यन्त साधु सन्तों, महात्माओं, विद्वानों, सज्जनों तथा पवित्र आत्माओं की संगत करनी चाहिए ताकि जीने की सही मार्ग-दिशा प्राप्त हो सके। निरन्तर अच्छे-अच्छे शिक्षाप्रद ग्रन्थों, पोथियों और लेखों का गहरा अध्ययन करके अपना बौद्धिक विकास करना चाहिए तभी जीवन के निर्माण में हम स्वयं कर्मशील रहेंगे। सत्संग और स्वाध्याय जीवनकाल के अन्तिम समय तक हमारे सहायक बनकर सफलता की ओर बढ़ाने वाले मज़बूत स्तम्भ है, इन्हीं के सहारे जीवन का निर्माण होता रहता है ।

बालचन्द तानाकूर

AUM

ARYA SABHA MAURITIUS

Arya Bhawan, 1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis, Tel : 212 2730, Fax : 210 3778

१४ जुलाई २०१५

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१५,सिडने-ओस्ट्रलिया - (२७-२९ नवम्बर २०१५)

आदरणीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते ।

सेवा में विदित हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं सिडने आर्य समाज के संयुक्त तत्वावधान में "अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – २०१५" का आयोजन शेन्स पार्कस सिडने, ओस्ट्रलिया में दिनांक – २७-२९ नवम्बर २०१५ तक किया जा रहा है।

आर्य समाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों और परिवारों से निवेदन है कि जो इस महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हों, कृपया आर्य सभा मोरिशस के दफ़्तर से सम्बन्ध स्थापित करें ।

अन्तिम तिथि – २५ जुलाई २०१५ । पता - *आर्य भवन, १, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई।*

कृपया – नाम, पता और आयु भी लिखें, ताकि सभा की ओर से यात्रा के लिए प्रबन्ध किया जा सके ।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

पुस्तकों का विमोचन

शनिवार दि० २७.०६.१५ को दोपहर २.३० बजे पाई आर्य मंदिर में तीन लेखकों द्वारा लिखी तीन पुस्तकों का विमोचन हुआ। मुख्य अतिथि पर्यावरण मंत्री माननीय राजकेश्वर दयाल की उपस्थिति में लोकार्पण समारोह रखा गया था पर कार्यव्यस्तता के कारण मंत्री महोदय ठीक समय पर नहीं पहुँच पाये फिर भी उपस्थिति देने से नहीं चुके । चाय पान के समय पर पहुँचे और उपस्थित सज्जनों की माँग पर अपना एक लघु संदेश दे ही दिया ।

भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती नूतन पाण्डे के कर कमलों द्वारा तीनों पुस्तकों का लोकार्पण हुआ – पहली पुस्तक 'श्रुति-स्मृति की अमूल्य वाणी एवं स्वस्तियाग' लेखिका प्रेमिला सिरतन ।

दूसरी पुस्तक – कक्षा १, २ और ३ की पाठ्य पुस्तकें – लेखक विद्या समिति – अध्यक्ष श्री प्रभाकर जीऊत, तीसरी - 'कतिपय समाज सेवी' भाग १-२ – लेखक सत्यदेव प्रीतम ।

सभा प्रधान डा० उदय नारायण गंगू ने बारी-बारी से तीनों पुस्तकों की लघु समालोचना की । समारोह सम्पन्न के बाद सभी उपस्थित महानुभावों को पेय और नमकीन से सत्कार किया गया ।

हर दृष्टि से कार्यक्रम सफल रहा।

मेघराज गुमाणी शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र

आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान एवं सावान और ब्लाक रिवर परिषदों के मिले-जुले सहयोग से बेल ओम्ब्र आर्य समाज ने अपने मंदिर के जीर्णोधार के बाद नये मंदिर का उद्घाटन गत रविवार दिनांक २८ को आर्य भाई-बहनों के बीच में किया। खुद श्रीमती नाराया के नाम पर ही मंदिर के भवन का नाम होगा। मुख्य अतिथि डा० उदयनारायण गंगू जी थे। उनके साथ लक्ष्मी नाराया गुमानी १२ अंतरगं सदस्यों ने उपस्थिति दी और आर्य सभा के १२-१३ पुरोहित-पुरोहिताएँ अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ा रहे थे। बिरले ही कभी किसी प्रान्तीय कार्य में इतनी अच्छी संख्या में अंतरंग सदस्य अपनी उपस्थिति देते हैं। मंदिर की शोभा देखते बनती थी। शरीर तो अच्छा बन गया अब अच्छा काम करना है तो अधिक शोभा होगी ।

कार्य का शुभारम्भ प्रान्त के चन्द पंडितों ने वरिष्ट पंडित आचार्य उमा के ब्रह्मत्व में किया। तत्पश्चात् यज्ञ सम्बन्धी भजनों का गान हुआ फिर वहाँ के युवकों द्वारा सुन्दर व रोचक कार्यक्रम पेश किये गये । एक परिवार के भाई-बहन ने संगीत की रोचक धून सुनाई। लोग सुनकर मुग्ध हो गए ।

मौके पर राष्ट्रीय सभा के निर्वाचित सदस्य एजरा झब्बू और वरिष्ट सांसद आलान गन्नू के छोटे-छोटे भाषण हुए ।

महाघातक मादक-द्रव्य

बालचन्द तानाकूर

सभी नशीले पदार्थों को मादक-द्रव्य कहा जाता है। भाँग, शराब, गाँजा, अफ़ीम, हशिश, चरस आदि नशीली वस्तुएँ महाघातक होती हैं। इन विनाशकारी वस्तुओं को ग्रहण करने से तो धन का नाश होता है ही, साथ-साथ स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है। जिस व्यक्ति को नशा लेने की बुरी आदत लग जाती है, वह बरबाद हो जाता है। इसीलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मादक द्रव्यों को बड़ा ही हानिकारक बताया गया है।

नशाखोरी से परिवार, समाज और राष्ट्र को क्षति पहुँचती है। विकास और उन्नति के सारे मार्ग बन्द हो जाते हैं। नशा करने वालों के बुरे वर्तावों से घर-परिवार में अशांति फैल जाती है। सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में शिथिलता आ जाती है। कितने व्यक्तियों की जानें नाहक चली जाती है और उनके बच्चे अनाथ हो जाते हैं, पत्नियाँ विधवा हो जाती हैं, परिवार के सारे सदस्य, सखा-सम्बंधी पीड़ित और दुखित हो जाते हैं। इन विनाशकारी चीज़ों से सदा दूर ही रहना अच्छा होता है ।

मादक-द्रव्यों की बुरी लत लग जाने से कितने लोगों के दिमाग बिगड़ जाते हैं। उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। उनकी मृत्यु अल्पकाल ही में हो जाती है। उनके सुखी परिवार दुखी हो जाते हैं। यह बड़ी ही चिन्ता की बात है कि हमारे इस सुन्दर देश में मादक-द्रव्यों का व्यापार तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। व्यापार में वृद्धि होने का संकेत यह है कि इस देश में नशेबाजों की संख्या बढ़ती जा रही है। हमारी सरकार मादक-द्रव्यों के सारे धंधे बन्द करने में लगी हुई है, राष्ट्र की ओर से पूरी कोशिश करने पर भी मादक द्रव्यों का व्यापार चलता रहता है और कितने लोग नशा कर रहे हैं। अतः हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी अपने परिवार के हर एक सदस्य को महाघातक पदार्थों से बचाएँ ।

यह बड़े ही खेद की बात है कि हमारे कई हिन्दू परिवारों में पिता-पुत्र, भाई-बहन, पति-पत्नी, सखा-सम्बन्धी साथ मिलकर किसी पार्टी, शादी-व्याह के अवसर पर अनुचित खान-पान से नशे में झूम उठते हैं। उनके बुरे व्यवहारों से धीरे-धीरे उनके बच्चे भी उनका अनुकरण करने लगे हैं। वे घर के बाहर अपने मित्रों के साथ बॉर, रेस्तोरेंट में शराब पीने लगे हैं और नशे में चूर होकर रात्रि में घर लौटते हैं। इस प्रकार कितने जवान कुसंग में पड़ कर नशीले पदार्थ ग्रहण करने लगे हैं और उनका सर्वनाश हो रहा है। युवावस्था ही में उनका विनाश हो जाता है ।

श्रेष्ठ जनों से उत्तम परिवार और समाज का निर्माण होता है। सर्वोत्तम समाज से राष्ट्र का विकास निश्चित होता है। इसी प्रकार दुष्टों के बुरे व्यवहारों से सर्वांगीण पतन होता है। नशेखोरी से डकैती, हत्याएँ, बलात्कार, झगड़े, दुराचार आदि इस स्वर्ग सदृश देश में बढ़ते जा रहे हैं, जिनसे सारी जनता चिन्तित है। हमारी सामाजिक संस्थाएँ चिन्तित हैं और सरकार हैरान है। हमें एक साथ मिलकर इस महा संकट स्थिति को सुधारने की आवश्यकता है। उन भूले-भटके जनों को सही मार्ग दिखाने की जरूरत है। यदि हम वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करके धीरे-धीरे उन अबोध लोगों को बोधित करेंगे तो अवश्य ही सभी महाघातक मादक-द्रव्यों का गैर कानूनी व्यापार जरूर बन्द हो जाएगा और मॉरीशसवासी सुख-शान्ति और चैन की ज़िन्दगी गुज़ारने में सफल होंगे।

पृष्ठ १ का शेष भाग

World Vedic Conference 2015 Shanes Park, Sydney, Australia

Dear Members,

This is to inform you that under the aegis of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha Delhi and Sydney Arya Samaj, an International Aryan Conference is being organised from 27th to 29th November 2015 at Shanes Park, Sydney, Australia.

All members of the Arya Samaj interested to participate in the conference are requested to make an advance deposit of Rs25,000 to secure all seats and hotel bookings by 25th July 2015.

In the same context a meeting of all interested delegates would be held at the seat of Arya Sabha Mauritius on Saturday 25th July 2015. Please bring along your Passport, Photocopy of 1st page Passport and two Passport size photographs.

Members are kindly requested to abide by the deadlines imposed for Ticket/ Hotel bookings & Visa requirements to enable a hassle free participation in the above conference.

Note : - For any further details please contact **Mrs Varuna Jodhun on Tel No: 2334587 or Mobile No. 57528924.**

Please note that the Visa Application & Visa Payment for Australia will have to be depos uited by the end of August 2015 at the Australian High Commission in Mauritius.

H. Ramdhony
Secretary

भारतीय हिन्दू प्रवासी का उद्धारक (आदोल्फ़ देप्लेवित्स)

रामावध राम

जब तक मनुष्य का उद्धार नहीं तब तक सुधार भी नहीं। भारतीय हिन्दू प्रवासी मोरीशस में बहुत दुख सहे, यह तो सभी लोग जानते हैं। परन्तु उनका उद्धार किसने किया? यह बहुत कम लोग जानते हैं। अगर जानते हैं तो बोलना भी नहीं चाहते। केवल एक आर्य समाज ही निर्भयता पूर्वक व्याख्यान कर सकता है, क्योंकि उसने सत्य पर विश्वास करना स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज से सीखा है। किसी का उपकार प्रति उपकार से किया जाता है। स्वामी जी सूर्य के समान है, उसको देखना व छूना कठिन है। केवल उनके प्रकाश तले हम जी सकते।

श्री देप्लेवित्स एक ऐसे व्यक्ति थे, मानो स्वामी दयानन्द के शिष्य। जो सत्य है, प्रकट करना और जो झूठ, अत्याचार है उनका सामना करना। देप्लेवित्स १८५८ में फिजी से आये, वहाँ भी भारतीय हिन्दू प्रवासियों के लिए लड़े। हिन्दुओं की दशा देखकर चौंक गये। गोरे लोगों ने उन्हें भारत से लाकर बहुत दुख दिया । काम नहीं तो कैसे जी सकते हैं ? उनके लिये आवाज़ उठाई। संघर्ष किया गोरों के साथ। आखिर क्यों ये भी आदमी आप के जैसे । बेचारे देप्लेवित्स अपना सब कुछ न्योच्छावर कर दिया गरीबों के लिए । प्रश्न किया – आप लोग क्यों ऐसे जीते हैं? माना कि आपके पास धन नहीं, पर बल ज़रूर है। उठो, जागो और आगे बढ़ो । अपना हक माँगो । जीने का हक – यह गोरों की बपौती नहीं !

कई बार उन्हें जेल में ढकेल दिया गया। उन्होंने सरकार को माँग पत्र-भेजा जिसमें कुछ लोगों के हस्ताक्षर (Signature) हैं। Restless Energy यह पुस्तक उनकी परनातीन लोरेता देप्लेवित्स ने ५ साल में उनके परदादे का कठिन परिश्रम पर लिखी । कुछ प्रवासियों के नाम इस प्रकार हैं – रघूनाथ, भोपरु, सुमित्री आदि आदि, ३० व्यक्तियों के नाम हैं। सौभाग्य है महात्मा-गांधी संस्थान का, जहाँ हमें ऐसी ऐतिहासिक पुस्तक प्राप्त हुई । जैसे स्वामी दयानन्द जी का, जितना भी उनका मानव जाति पर कल्याण का वर्णन करेंगे, उतना ही कम है। ठीक वैसे श्री देप्लेवित्स ने गरीबों का जितना उद्धार किया उसका वर्णन करना कठिन है । जब तक गरीब स्वतन्त्र न हो, उनको रोटी-कपड़ा और मकान न मिले, तब तक उनका सुधार नहीं हो सकता। जब हमारे भारतीय हिन्दू प्रवासी कुछ साँस जीने की ली तब उनकी समझ आई समाज क्या है, और जीने की कला क्या है ।

माँ से बड़ा कोई गुरु नहीं

डॉ० विनय सितिजोरी, बी.एन.वाई.एस, बी.ए.एम.एस

पृथ्वी जैसी बड़ी पुस्तक यदि 'माँ' शब्द पर लिखी जाय तो भी यह पुस्तक छोटी पड़ेगी ।

'ममता की मूर्ति है माँ' – सारा संसार बदल जाए लेकिन कभी माँ नहीं बदलती । यक्ष ने धर्मराज युद्धिष्ठिर से पूछा कि पृथ्वी से भारी कौन है ? तब युधिष्ठिर ने उत्तर दिया (माता गुरुतरा भूमेः) अर्थात् माँ इस धरती से भारी है ।

वेद कहते हैं कि माँ अपनी औलाद के लिए रसमयी, ममतामयी, समतामयी, स्नेहमयी तथा अपनी औलाद के हित के लिए समर्पण करने वाली होती है । प्रभु सब कुछ उत्पन्न करते हैं। परन्तु माँ उत्पादिका तथा पोषिका भी है। आदि शंकराचार्य जी ने कहा है – **'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'** अर्थात् पूत तो कपूत हो सकता है लेकिन माता कुमाता कभी नहीं हो सकती। माता पोषण करती है, माँ शोषण नहीं करती ।

कुरान ए मजीत में लिखा है कि माँ के कदमों में जन्नत होती है अर्थात् माँ के चरणों में स्वर्ग होता है। बाइबिल में मूसा के माध्यम से ईश्वर ने फ़रमान दिए हैं कि तू अपनी माँ का आदर कर अर्थात् हे मानव ! तू अपनी माँ का आदर कर ताकि तुझे दीर्घायु का सुख प्राप्त हो सके।

संसार में वैसे तीन गुरु मुख्य रूप से तीन शिक्षक माने गये हैं । सर्वप्रथम माता – माता का दर्जा प्रथम आता है, दूसरे पिता तथा तीसरे गुरु का ।

धन्य है वे औलाद जो अपनी माँ की भावनाओं का सम्मान करती हैं । गर्भ में आते ही माँ के पेट में रहकर ही मनुष्य सब कुछ सीखता चला जाता है । समस्त संसार परमात्मा का स्वरूप है परन्तु नारी साक्षात रूप में माँ दुर्गा का प्रतीक है ।

वेदों में मनुष्य की सोलह माताएँ बतलाई गई हैं । स्तन पिलाने वाली, गर्भधारण करने वाली, भोजन देने वाली, गुरुपत्नी, ईष्टदेव की पत्नी, पिता की पत्नी, विमाता, सौतेली माँ, बड़ी बहन, पुत्र-वधू, सास, नानी, दादी, भाई की पत्नी, मौसी, बुआ और मामी ।

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*473,081.00*
1.	Vinod Pem, Vassantee Jookoo, Pritam Jookoo	100
2.	V. Jookoo, Vashil Jookoo, Kamal Jookoo, Artee Jookoo	100
3.	Bhavna Boodhun, K.Chokupermal, Roshan Kumar Suburrun, Daminee Soburrun	100
4.	C.Agathe, D.Koonjoobeeharry, S.Boodhoo, S.Sunkur	100
5.	R.Boodhun, Priya Neerpath, Diane Chantoiseau, M.Bullyraz	105
6.	Anju Gopaulchand, Sunita Rambarat	225
7.	Vijay Kumar Rambarat	200
8.	Mungur Hanshvahinee, Meedousha Dookhun	150
9.	S. Mungur Prakash	100
10.	Deoranee Boodhoo, Nitish Mungur	150
11.	Sonalall Nemdharry Family	1000
12.	Nugessur Dharmawtee, D. Ramtohul	250
13.	Deepak Ramtohul	200
14.	Manan Tahacul	200
15.	Sohodes D.	200
16.	Rita Ramtohul	100
17.	Gurburrun Bahenji	100
18.	Lutchmeenarain Ramchurn, Chandraduth Seechurn, Pt. Sooroojdeo Jankee	3500
19.	Arvind Lilkunt	100
20.	Kiran Bohoree	100
21.	Bhumija Seegoolam	200
22.	Mohit Chando	200
23.	Razwantee Devika	100
24.	Sookanee Aneerood, Rughoobur Premila	150
25.	Sheela Balgobin	100
26.	Ramchurn Dhanwantee	200
27.	Sumputh Soobhawtee	300
28.	Balgobin Shakhila	100
29.	Mohit Pratima	100
30.	Kalyanee Ghoorah	100
31.	Rambhujun Pranay, Nischaye Lilkunt	150
32.	Premadah Lilkunt	100
33.	Bouba Kids P.P. School	200
34.	Nirmal Lilkunt	100
35.	Ramchurn Sabhit	100
36.	Bhugowan Chitrani, Bhaugeerutty Deorani, Ramjee Manjrobye, Bheergonauth Radika	100
37.	Lufur Kalyan Devi, Ramdewar Soobhawtee, Ramgoolam Nirupa,Bhoyrah Dhanwatee, Coonjul Sobhur, Ajodha Gyantee	150
38.	Minta Lutchuman	100
39.	Deomatee Hulkory	100
40.	Satee Hulkory	100
41.	Artee Hulkory, Kamla Hulkory, Reshma Hulkory	100
42.	Annie Hulkory, Janky Mohabeer, Mahentree Ghubhurrun	125
43.	Anjanee Ramrekha, Soomatee Nunka	100
44.	Nugessur Dharmawtee, Ramloll Premawtee	100
45.	Caroline AMS No 445	1000
46.	Lutchmee Lutchmun, Sandhya Devi Pokhun	100
47.	Sanjay Meetooa, Goorjadanand Meetooa	150
48.	Gokulsingh Rakesh, Boodhooa Govind Sharma	100
49.	Boodhooa Ragini, Nilesh Buswal	150
50.	Rajeshwar Baswah	500
51.	Dunwantee Gokooluck	100
52.	Vidisha Bipta, Jyotee Bipta	100
53.	Vivekanand Jhongoor	150
54.	Chinta Bipta, Jayshree Ganessee	100
55.	Bhowtee Bipta, Samanta Nundoo	150
56.	Santaun Gokooluk, Dharmarajenda Sohorye	150
57.	Sobha Naga	200
58.	Doolari Jeenarain	200
59.	Soobhavli Bundun	200
60.	Kamla Upiah	100
61.	Priyam Sungkur, Dewanti Ramprosad	150
62.	Damiantee Aubeeluck	300
63.	Sashi Rekha Paupiah	200
64.	Pta Satyabama Domun	2000
65.	Domun Raj Pt.	100
66.	Domun Arshinee Swarna	100
67.	Arvindradutt Rambhujun	200
68.	Domun Vatsyayan	100
69.	Dowlatee D.	100
70.	Nundoo Saryanta, Nundoo Ananjay	300
71.	Domun Anita	500
72.	Urmila Ramful	300
73.	Deohutee Manogee	100
74.	Chando Icharam, Savita Devi Seetohul	100
75.	Lallmanee Guness	200
76.	Itabhai Dajee	100
77.	Sanjeev Sohorye	200
78.	Bhanoo Dutt Domun	500
79.	Domun Keshav, B.Gobin	150
80.	Vijay Kumar Domun & family	800
81.	Vedwantee Sohorye	200
82.	Urmilla Ramful	200
83.	Aartee Gookooluk	100
84.	Bhurut Boodhun, Havish Gookooluk	150
85.	Sawon Gookooluk	200
86.	Karishma Gookooluk	100
87.	Adesh Gookooluk, Mala Banoo, Dussoye family	200
88.	Sasadna Lalita	100
89.	Lillah Sangeeta	100
90.	Lillah Seeta, Domun Chandranee	100
91.	Kasseah Vidyawatee	100
92.	Boodhooa Geeta, Bissoondoyal Uma	100
93.	Dussoye Soobhawtee	100
94.	Dassoye Shri Jankee	100
95.	Dassoye Divya, Sanjay Oozageer	175
96.	Mrinal Mantadin	100
97.	Priyadev Seewolall, Yannish Oomur, Nihal Seewoolall	175
98.	Chewalall Seewoolall	100
99.	Ghoorah Kalawtee	100
100.	Teeluck Anita	200
101.	Matabadal Seeteah	100
102.	Chandramani Ramgoolam	100
103.	Vanita Boodhoo, Kishan Boodhoo	100
104.	Pramoda Boodhoo, Nalini Bundhun	100
105.	Dewantee Nawosah	100
106.	Prabita Nawosah, Indira Buldan	100
107.	Gyantee Buldan	100
108.	Sundesh Buldan, Domeshwaree Buldan	150
109.	Bhavisha Buldan, Anjani Matadeen	100
110.	Silla Sahye	100
111.	S.Rawoo, Sumatee Bahjun, S.Ramparsad, Kavita Ramphul	100
112.	Souvira Seegoolam	500
113.	Satyajay Jhingoor	200
114.	Kaveesh Rambhojun	100
115.	Manish Ramburrun	100
116.	Kavita Rambhojun	100
117.	Sreedevi G.Jhingoor	1000
118.	Yajsheeka Rambajun, Vashi Lvanika Jhingoor	100
119.	Karoona Damry	200
120.	Munjula Ramsaha	200
121.	Ramesh Rambojun	100
122.	Malamutty Naga	100
123.	Soodevi Paupiah	500
124.	Kumari Naga	100
125.	Anita Bhujun	200
126.	Meeta Bhoobun, Kiran Ramburrun	225
127.	Rushil Jhingoor, Ramesh Ramburrun	225
128.	Nishal Nawasah, Indranee Pillay	130
129.	Ramesh Rambojun	100
130.	Roopsheela Rambojun, Divya Ramsaha	100
131.	Hushmandini Damry, Amrita Damry	120
132.	Shivranee Jhingoor	100
133.	Gobardhan	500
134.	Pt. Ramdin	500
135.	Aditya R.	200
136.	Jadiyon	100
137.	Dorloyon	100
138.	Okaj, Luxmee Rawoody	100
139.	Anup Ramdu	300
140.	Puttyah Satyanand	500
141.	Puttyah Manish	200
142.	Devi Dookhy	100
143.	Vidiawatee Dawoonah	200
144.	Geeta Choonee, Sarada Jootun, Pratibha Mogaul	175
145.	Jayantee Dabydoyal, Dhurmawtee Mohun	100
146.	Satee Savitree Mohun	100
147.	Sheela Charaneek	100
148.	Sheela Makoona, Anita Kissoondoyal, Vinoda Kalee	100
149.	Chandra Devi Soodhoo	100
150.	Nirmala Mohun, Sheela Sookaloo	150
151.	Nitish Sookaloo	100
152.	Shosila Busawa	100
153.	Subita Raghooo	100
154.	Anita Banewari	100
155.	Devika Ruckhumty	100
156.	Neelavadee Curpen	100
157.	Danwantree Lobind, Jamountee Greedharee	125
158.	Sundesh Buldan, Poonam Buldan	100
159.	Soomatee Devi Buldan, Dhunanjay Buldan, Vedwantee Buldan	100
160.	Ojusivi Buldan, Mantrosh Buldan, Gyan Buldan	100
161.	Geeanty Buldan, Indira Buldan	100
162.	Anandeet Ramtohul, Dhunwantee Ramtohul	100
163.	Buldan Hastamand	100
164.	Laksh Buldan, Huury Bucktowar, Dhunwantee Bucktowar	125
165.	Stephanie Lenete, Nawshid Ozer, Sujata Munory	100
166.	Callychurn Anushka, Dr. Sookha	225
167.	Dr. Thakoor	200
168.	Amlesh Lallchand, Dr. Mundil	225
169.	Rani Poyroo, Devina Dunnoo, Jessica Ramsamy	125
170.	Raj Baldeo, A.Jhutee	150
171.	K.Jhutee	300
172.	Ambika Balgobin	100
173.	Krisnawtee Ramkissoon	125
174.	Devanand Anjuyah, Vinay Mohun, Naranien Mohun, T.Adhun	125
175.	Rajen Raghoo	100
176.	Taramam Soodin	200
177.	Chandar Mohun	200
178.	H.Deobaruth, C.Sooryadeo	150
179.	R.Kanayah	100
180.	Somaya V.	100
181.	N.Kauppaymuthoo, T.Marthamuthu, N.Vandetwar, Ramborun Vinod	175
182.	Salick P.	200
183.	Bissoon Domah	100
184.	Ramnanun Sunkur	200
185.	Surendranath Boodhooa	100
186.	Rajen Ramdhony	100
187.	Gamend Domah	100
188.	Viren Dwarka, Satish Lillah	150
189.	Ranjeet Bundhun	100
190.	Narainduth Domun	100
191.	Soodharam Gokhooluck	100
192.	Subhiraj Teeluck	100
193.	Arya Samaj No 33	500
194.	Kewal Nayeck	200
195.	Dasoontee Luxmeen, Soobkarun Veena	100
196.	Chanda Subrun, Tanuja Booluck, Swastee Booluck	100
197.	Samotah, Teeluckdharry, Sidhari Madri	125
198.	Mohun Chandrawtee, Fokeermamod, Mungul Kumari	100
199.	Sabit Jatinaiko	100
200.	Santa Jugroo, Kalyanee bye Mahadeo, Nira Subrun	125
201.	Premlall Bouluck, Karamchand Booluck	100
202.	Vijaypratab Subrun, Satish Booluck	100
203.	Satish Kurumun, Luxmi Soobkarun	100
204.	Shyam Dasoontee, Prem Teeluckdharry	100
205.	Achootah, Devanand Subrun	100
206.	Aneerood Sookarry	100
207.	Indurdeo Balgobin	100
208.	Oodaye Lunguth	200
209.	Vaibhav Ramchurn	100
210.	Vijaye Ramchurn	100
211.	Ajay Balgobin	100
212.	Deepak Balgobin	100
213.	Navdeep Balgobin	100
214.	Nishta Balgobin	100
215.	Lutchmeenarain Ramchurn	200
216.	Pt. B.Chunnoo	200
217.	Savita Chunnoo, Youvaraj Chunnoo	100
218.	Youvdish Chunnoo, Yajna Chunnoo	100
219.	Yannah Naidoo, Youvan Naidoo, Lovena Mungur, Prakash Mungur	100
220.	Joshna Mungur, Jashil Mungur, Ramesh Mungur	100
221.	Indranee Mungur, Tina Chunnoo	100
223.	Naarvada Chunnoo, Mushib Inkesh, Amrita Chunnoo	100
224.	Kavita Gopy, Ashna Gopy,Yeshna Gopy	100
225.	Babita Chunnoo, Pardooman Chunnoo	100
226.	Avish Chunnoo, Tara Chunnoo, Jocelyn Seerungen	100
227.	Andoinett Seerungen, Anaelli Seerungen, Melissa Seerungen,Jondi Seerungen,	100
228.	Wenda Seerungen,Samatha Seerungen, Shanti Seeruthun,Sareeta Teeluck	100
229.	Anand Bilta,Jaymantia Bilta, Jessen Anjore, Kalyan Anjore	100
230.	Nanda Ramsamy, Wootun Ruttun, Mohunlall, Karishma Chunnoo	105
231.	Grace Jugnuth, Shayen Jugnuth	100
232.	Manilall Chunnoo	100
233.	Sobhadevi Chunnoo	100
234.	Rojamawee Naidoo	100
235.	Karina Chunnoo,Pravesh Chunnoo, Rishika Chunnoo, Yushita Chunnoo	100
236.	S.Nundlall/ R.Neerunjun	100
237.	D. Ramphul /K.Boodhun	100
238.	S. Bundhoo/R. Goodharry	100
239.	Beejooa Jaysree	200
240.	Ramdeen Swastika	100
241.	Mudhoo.D/Kheytoo Dhanwantee	150
242.	Kanhye Anuradha D.	100
243.	Kanhye Sudhir	200
244.	Dabeeah Gaurav Sharma	200
245.	Pta. Dabeeah Simla Devi /Family	300
246.	Dabeeah Mahabeer	175
247.	Laventure AMS 367	500
248.	Grande Retraite AMS 404	500
249.	Petite Retraite AMS 323	575
250.	Lallmatie AS 277	500
251.	Lallmatie AMS 250	500
252.	Anunda Radha	200
253.	Anunda Yenakshi	200
254.	Anunda Ritika	200
255.	Lallbeeharry Chitra	300
256.	Lallbeeharry Mounia	200
257.	Chumun Geeta	100
258.	Chumun Dina	100
259.	Choolun Mala	100
260.	Aukloo Santa	129
261.	Jugdish Mussai & Family	200
262.	Toofany Mala	100
263.	Mussai Dharmawtee	100
264.	Lutchoomun Mala	120
265.	Hurpaul Gheeta	100
266.	Hurpaul Narainee	100
267.	Saddoo Sumitra	100
268.	Dooly	100
269.	Reeseaul Basant	100
270.	Satte Beenick	100
271.	Beerbul Kumar Ramdonee	100
272.	Rajgooroo Joye	100
273.	Shastri Beenick	50
274.	Ramsurrun Mira	100
275.	Arya Samaj Brc No. 126 G-Lands	3,000
276.	Arya Samaj Bch No.160 Atlas Rd	800
277.	Arya Samaj Bch No. 146 Astoria Rd	1,200
278.	Arya Samaj Allee Mangue	500
279.	Ajay Thyhubun	100
280.	Vinod Dhansa	500
281.	Cholah Deo	125
282.	Gokool Rajkumari	100
283.	Gokool Ooma	200
284.	Pt. Rajeshwar Mudhoo	400
285.	Gokool Anuradha	100
286.	Maheshwar Dewan	500
287.	Lower Dagotiere Mahila Samaj	500
288.	Glands Arya Samaj/Pt. Mudhoo, Mudhoo Prabhakar Arya	125
289.	Mudhoo Manisha	125
290.	Mudhoo Gyanneswaree	600
291.	Pt. Mudhoo Rajeshwar	325
292.	Jakhun Sonam	100
293.	Neyhaul Pooja	100
294.	Barry Jessine	500
295.	Sobrun Lutchmee	100
296.	Subrun Sanjay	100
297.	Subrun Vidyawatee	100
298.	Bholah Vanshil	160
299.	Subrun A	100
300.	Seebrun Bharati	100
301.	Kandarsing Sanyo	100
302.	Kandarsing Suresh	100
303.	Sobran Mantee	100
304.	Mudhoo Kaushik Arya	90
305.	Curepipe Arya Samaj, Seebaruth Nundlall	100
306.	Gukhool Ashok	100
307.	Maunkee Abhimanyu	100
308.	Prithipaul Arvind	1,000
309.	Jahazeeah C.	200
310.	Dhawtal	150
311.	Jeelall Geeanduth	200
312.	Saddul Imtiaz	100
313.	Mangal Amit	100
314.	Munbodh Amrita	100
315.	Neeladoo Pravin	100
316.	Sookye Gawtam	100
317.	Aumeeraun Jayendra	100
318.	Ramgoolam Tirvin	100
319.	Poolly Yogesh	100
320.	Labiche Jevin	100
321.	Pareanen Yeshen	100
322.	Aujayeb Karishma	160
323.	Auckle Chandanee	200
324.	Aujayeb Vansh	125
325.	Aujayeb Ansh	125
326.	Ropon Manisha	200
327.	Jeewuth Neha	500
328.	Goreeba Pravina Devi	200
329.	Padaruth Jayshree	100
330.	Padaruth Anjanee	100
331.	Loolchand Atish	100
332.	Palaram Vickramsingh	100
333.	Komar Premchand	75
	TOTAL	**Rs 538,900.00**

..... *to be continued*

IN LOVING MEMORY OF LALLDEO BISSESSUR (alias Giandev)

By Sookraj Bissessur

"All things are subject to decay – when fate summons monarchs must obey".

P.B. Shelley (Famous English Poet)

LALLDEO BISSESSUR - (MR) – most commonly known as Giandev –a staunch Arya Samajist has breathed his last peacefully at the age of (75) at his abode-Ilot-Pamplemousses on the cool evening of 12th June 2015.

After having served as Treasurer of Ilot Arya Samaj for more than a decade, with loyalty, generosity, honesty and sincerity of purpose, he has devoted his life to the huge mission of propagating, promulgating and promoting the course of Vedic Culture. Being also a strong and active member of Ilot Arya Samaj, (MR) Lalldeo Bissessur was a magnanimous person. His jovial demeanour has always won the heart(s) of one and alike. Though an ardent follower of the Arya Samaj and its tenets, since a tender age, yet he had a very broad dimension, and his approach to life and religion was not rigid, but very comprehensive. He was not a conservative zealot. Eventually speaking, he was approachable with immense accommodating attributes. He was, in short, quite flexible.

As a matter of concrete fact, Lalldeo Bissessur, was also an enthusiastic Social Worker. In fact, only a few people are endowed with the aptitude and ability to laugh and make others laugh along with as well.

While being a man of society, Lalldeo Bissessur was also an exemplary family man-a model for future generation. He was also known to have only three addictions:- Work, Worship and Meditation, which eventually converted him into a workaholic. Besides, he has also been a well noted and well known sugar cane planter.

For the enormous good, noble and outstanding social service rendered by late-Lalldeo Bissessur, to the inhabitants of Ilot-Pamplemousses and also to the entire Mauritian Nation, in many ways under the aegis of Ilot Arya Samaj and Arya Sabha Mauritius. The latter was honoured by the Pamplemousses Arya Zila Parishad-last year (2014)-upon the recommendation of Dr Jaychand Lallbeeharry-President of Pamplemousses Arya Zila Parishad.

He has left behind him a widow, six children- three sons and three daughters- (all married), son-in-laws, daughter-in-laws and grandchildren:

Ultimately let us all reflect, realise and philosophize upon what famous French writer Charles Baudelaire has pointed out about **DEATH** :

"To look fearlessly upon birth and death,
to accept the laws of nature and
to have confidence within our souls.
Are the beliefs that keep us going on
and feel oneness with the universe,
while memories of a loved one remain
in the heart. They are never, ever lost,
but live forever and ever".

Mother's Day Celebration at DAV College Morcellement St Andre

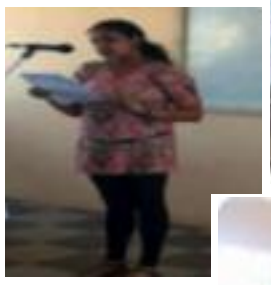

The Staff Welfare Fund Committee of the DAV College Morc St Andre organized the Mother's day celebration for the whole staff on Friday 29 May 2015. The idea behind organizing the ceremony was to give more value to this special day and also have a get-together for the staff. The event consisted of songs, poems and speeches paying tribute to Motherhood, which is considered as one of the fundamental institutions of human life.

A meal was also served to the staff. In the end, each member was gifted a rose. The ceremony was a grand success and was appreciated by the staff.

It should be recalled that the main objective of the Staff Welfare Fund Committee is to organize activities for the welfare of its members in a spirit of unity in diversity. Both the teaching and the non-teaching staff are members of the Staff Welfare Fund Committee.

स्वामी दयानन्द सरस्वती

लक्ष्मी जयपोल

वे हिन्दुत्व के रक्षक थे और आधुनिक भारत के निर्माता। उन्होंने १८२४ में ब्राह्मण परिवार में टंकारा में जन्म लिया था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता जी कर्शन लालजी तिवारी भगवान शिव का अनन्य भक्त थे और स्वामी दयानंद ने अपने पिताजी से धार्मिक मंत्र सीखा। आठ साल की उम्र में उन्होंने जनेव धारण किया था और चौदह साल में स्वामी दयानन्द जी ने पूरा वेद कंठस्थ कर लिया था।

मूलशंकर ने महाशिवरात्रि के अवसर पर उत्साहपूर्वक व्रत धारण किया था और वह तारेश्वरनाथ मंदिर था जो उस गाँव का सबसे बड़ा मंदिर था। उस रात्रि-जागरण में एक मूषक भगवान शिव की प्रतिमा के पास घूमने आया और प्रसाद भी खा रहा था। उन्होंने अपना व्रत तोड़ दिया और कमज़ोर पड़ गए। वे अपने चाचा और बहन की मृत्यु से अत्यंत विचलित हो गए थे। वे बुद्ध की तरह जीवन और मृत्यु का कारण जानने के लिए हो गए थे। मई १८४६ में स्वामी जी के माता-पिता उनकी शादी की तैयारियाँ शुरू कर रहे थे तो वे चुपचाप घर छोड़कर सत्य की खोज में चले गए ।

मूलशंकर जी ने चौदह साल तक संन्यास जीवन व्यतीत किया और नवम्बर १८६० में उन्होंने अपना सत्यगुरु प्राप्त किया उनका नाम स्वामी वीरजानन्द था परन्तु वे अंधे और महान् वैदिक विद्वान् और व्याकरणशास्त्री थे। स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु से पाणिनि व्याकरण, वेदांत सूत्र और हिन्दू शास्त्र सीखे उन्होंने स्वामी वीरजानंद से तीन साल तक वैदिक शिक्षा पाई। जब उन्होंने अपने गुरु से विदा लेने जा रहे थे तो उन्होंने गुरु दक्षिणा के रूप में लौंग दिया। स्वामी दयानन्द के गुरु ने उसे शास्त्रों का ज्ञान, मानवता की उन्नति, अंधकार का निवारण, पवित्र शास्त्रों की रक्षा और आजीवन वेद को स्थापित करने का आदेश दिया। उन्होंने विश्व भर में वैदिक ज्ञान का प्रसार किया ।

१० अप्रैल १८७५ में स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की और दस नियम भी लागू किये। उन्होंने वैदिक धर्म को सर्वप्रिय धर्म माना और वेद ही सभी धार्मिक विद्या का स्रोत है। वेद सनातन, भगवान का पूरा रूप है। चारों वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा द्वारा रचा गया था। उन्होंने हिन्दुत्व वेद की ओर पुनः लौटने (back to the Vedas) से अबर सकता है। स्वामी दयानंद जी को कहना है कि आधुनिक विज्ञान के आविष्कार वेद से उत्पन्न हुए है। उन्होंने मूर्ति पूजा को अवैदिक कहा। भगवान एक ही है और वे सर्वत्र और सर्वव्यापी है। वे समाज सुधारक थे और उन्होंने जातिवाद, सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूट का विरोध किया। समाज में चार हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। स्वामी दयानंद और उनके अनुयायी शुद्धि अभियान शुरू किया । उन्होंने सिद्ध किया कि भगवान के सामने सभी लोग एक समान हैं। नारी उत्थान में उनका योगदान अपूर्व था और लड़कियों को पाठशाला जाने का अधिकार दिया था। नारी भी पुरुष के समान है भारत की राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने भारी योगदान दिया ।

स्वामी दयानंद के संदेश और शिक्षा पूरे मानवता के लिए थे। हिन्दुओं के विदेश जाने का अधिकार नहीं था। विदेश जाने से व्यापार, कला, वैदिक शिक्षा का प्रचार और मानसिक वृद्धि का मार्ग खुला। वे चाहते थे कि मनुष्य मानवता की उन्नति के लिए काम करे। उन्होंने अपनी शिक्षा एवं संदेश का प्रचार-प्रसार के लिए सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, यजुर्वेद भाष्य, वेदांत प्रकाश जैसे उत्तम शास्त्रों का सृजन किया । सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्द का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ थे। ३० अक्टूबर १८८३ दीवाली के अवसर पर स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण। वे एक सक्रिय धार्मिक सुधारक थे और वे सही अर्थ में देश भक्त थे। उन्होंने देशभक्तों को भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने को प्रेरित किया और उन्होंने हिन्दू धर्म एवं समाज के कारण अपना जीवन को त्याग दिया।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576

MAURITIUS ARYA YUVAK SANGH
under the aegis of Arya Sabha Mauritius
You & Members of your family are cordially invited to attend

YUVA DIWAS
&
INDEPENDENCE DAY CELEBRATION OF INDIA

Date : Saturday 15th August 2015.
Time : 1.15 p.m.
Venue : Mohit Hall, St. Pierre.

Programme : Yajna, Sangeet, Message, Yoga, Presentation, Drama, Power Point Presentation, Facebook Page Launching, Award Ceremony.

Eminent Personalitites will grace the function.

Gangoo Dharamveer *President* **Boodhun Anurag** *Secretary* **Poteeram Yashvind** *Treasurer*